हिंदी शिक्षण कार्यशाला

दिनांक-19/10/2024

आज की कार्यशाला के अंतर्गत-

*हमने मात्राओं की पहचान के लिए सही उच्चारण का होना जरूरी है जाना, क्योंकि हिंदी भाषा ऐसी है "जैसा हम बोलते हैं वैसा ही हम लिखते हैं"।

*ध्वनियों की पहचान।

*हिंदी भाषा संस्कृत की देन है।

*वर्णों का उच्चारण स्थान।

*वर्णों में खड़ी पाई का महत्व।

*र - का उच्चारण स्थान

*अनुस्वार व अनुनासिक वर्ण

*सघोष और अघोष वर्ण

*वाक्य में सबसे महत्वपूर्ण स्थान क्रिया का है।

*क्रिया के प्रकार अकर्मक सकर्मक ।

*संयुक्त क्रिया

*प्रेरणार्थक क्रिया

*नाम धातु क्रिया

*सहायक क्रिया

*वाच्य क्या होता है?

वाच्य के प्रकार

1-कर्तृवाच्य

2-अकर्तृवाच्य

इत्यादि।

*जिस वाक्य में वाच्य बिंदु कर्ता है उसे कर्तृवाच्य

कहते हैं।

उदा-बच्चा दूध पीता है।

अकर्तृवाच्य-जहां वाच्य बिंदु कर्ता न होकर कर्म हो वहां कर्मवाच्य और जहां वाच्य बिंदु कर्ता या कर्म न हो, बल्कि क्रिया का भाव मुख्य हो उसे भाववाच्य कहा जाता है।

कर्मवाच्य-बच्चे के द्वारा दूध पिया गया।

भाववाच्य-बच्चों से दूध पिया नहीं जाता।